संक्षेपण

कोनो देल गेल अवतरणक भावकेँ बिनु नष्ट कयने ओकरा एक तिहाइ शब्दमे व्यक्त करब संक्षेपण थिक। मूल अवतरणक सार, क्रमबद्धता, संक्षिप्तता, स्पष्टता, शुद्धता आ सरलता संक्षेपणक प्रमुख गुण अछि। संक्षेपण देल गेल अवतरणक भावसँ सम्बद्ध एकटा शीर्षक देब आवश्यक अछि।

उदाहरण स्वरूप

उदाहरण-1 (अवतरण)

आइ सर्वत्र उदासी व्याप्त अछि। चरित्रमे ह्रास भेल जा रहल अछि। मुदा जँ हमसभ मिलिकऽ एहि दिशामे तन-मनसँ लागि जाइ तँ चरित्र रूपी गाड़ीक हम स्वयं कुशल चालक बनि सकैत छी आओर चरित्र रूपी गाड़ीकेँ लुढ़कबासँ बचाकऽ सही दिशामे अग्रसर कऽ सकैत छी, मुदा एकरा लेल पहिने चरित्रवान बनऽ पड़त आ मौन व्रतधारी जकाँ एहि दिशामे बढ़ऽ पड़त। दीप सदृश तिल-तिल जरि कऽ अपन प्राणक आहुति देबऽ पड़त।

प्रारूप

चरित्रक महत्त्व

मनुक्ख अपन चरित्रक निर्माता स्वयं होइछ। चरित्र-भ्रष्ट व्यक्ति चतुर्दिक ह्रासक कारण बनैछ। तेँ तन-मन लगाकऽ सभकेँ चरित्रवान बनबाक चाही तखनही चहुँमुखी विकास संभव थिक।

अवतरण -2

परमेश्वरक व्याख्या अनन्त अछि। हुनक विभूतियो अनन्त अछि। हुनक आश्चर्यचकित करऽवला विभूति किछु कालक लेल हमरा वशीभूत कऽ लैत अछि मुदा हम पूजारी तऽ सत्यरूपी परमेश्वरक छी। वएह एक मात्र सत्य थिक आओर सभ मिथ्या।

प्रारूप

सत्यहि परमेश्वर थिकाह

परमेश्वर सत्यक पर्याय थिक जकरा छोड़िकऽ सम्पूर्ण जगत मिथ्या थिक।

अवतरण-3

हम स्वर्गक बात किएक करी? वृक्षारोपण कऽ कऽ हम एतहि स्वर्ग किएक ने बनाबी? महान सम्राट् अशोक कहने छथि जे-''रस्ता पर हम बट वृक्ष रोपि देलहुँ अछि, जाहिसँ जीव मात्रकेँ छाहिर भेटत। आमक गाछक समूह सेहो लगा देलहुँ अछि।

आइ प्रभुत्व सम्पन्न भारत एहि महाराजर्षिक राज चिन्ह लऽ लेलक अछि। 23 सौ वर्ष पूर्व ओ देशमे जेहन एकता स्थापित कयलनि, ओहिना हम प्राप्त कयलहुँ अछि, की हमरा लोकनि ओहि सन्देशकेँ सुनि नहि सकैत छी, एहि सन्देशकेँ सुनिकऽ निश्चित रूपसँ एहन प्रबन्ध कऽ सकब जाहिसँ भारतक सभ प्रजाजन कहि सकताह जे हमरा लोकनि जाहि रस्ता पर वृक्ष लगाओल, ओ जीव मात्रकेँ छाहरि दैत अछि।

प्रारूप

सम्राट अशोक जीव मात्रक हितमे रस्ता पर वृक्ष लगाकऽ भूमिकेँ स्वर्ग बनाओल, ओ देशमे एकता स्थापित कयलनि। वर्त्तमान सरकारो ओहि सन्देशक आधार पर देशमे एकता स्थापित कयलनि आ वृक्षारोपण कयलनि।

अवतरण-4

हमरा बजारक भोजन खएबामे एकदम नीक नहि लागल।

प्रारूप

भोजन स्वादहीन छल।

अभ्यास हेतु अवतरण

नीचाँ देल गेल अवतरणक उचित शीर्षक दए संक्षेपण करू।

अवतरण-1

माइक भाषा थीक मातृभाषा। एहि भाषाक बोली नेना जन्महिसँ माइक मुहसँ सुनबाक सौभाग्य प्राप्त करैत अछि। एहि बोलीक स्वर आजन्म मर्मस्पर्शी होइत छैक। हम सभ मिथिलावासी छी तेँ हमर मातृभाषा मैथिली थीक। एकर महत्त्व छैक। तेँ ओ कहिओ नहि बिसरल जा सकैत अछि। कारण देशक यथार्थ परिचय पएबाक हेतु एवं ओकर भूत, वर्त्तमान आ भविष्यक स्वरूप ज्ञान ओहि देशक लोक द्वारा ओहि भाषामे लिखल ओहि देशक साहित्यक अध्ययनसँ होइत छैक। साहित्यमे मानुषिक प्रवृत्ति केर विचारधारा निहित रहैत छैक। ई एक दर्पण थिक जाहिमे मनुष्य वर्त्तमान की अतीतक दर्शन सेहो कय सकैत अछि। हमर मातृभाषा मैथिलीक साहित्य छओ सए वर्ष पुरान अछि। एकर सबल साहित्य छैक। एकर शब्द भण्डार बड़ समृद्ध छैक। ज्योतिरीश्वर ठाकुर, विद्यापति, गोविन्द दास, चन्दा झा आदि कविक कृति मैथिली भाषाक सुरक्षाक स्तम्भ अछि। एकर साहित्य काव्य, नाटक, गद्य आदि विधामे कोनो देशी भाषासँ न्यून नहि अछि। एकर बजनिहार तीन करोड़ व्यक्ति छथि।

अवतरण-2

परोपकारक भावना मात्र मनुष्येटामे नहि अछि। एकर पवित्र भाव प्रकृति पर सबसँ बेसी स्पष्ट अछि। वृक्ष अपन पत्र, पुष्प, फल ओ डारि सभ किछु अनके हेतु त्याग करैत अछि। जल सभ जीव-जन्तुक प्राणरक्षक भए जीवन कहबैछ। पशु भारवहन कए परोपकार करैछ। सूर्य दिन-राति चलैत रहैत छथि। चन्द्रमा संसार भरिक व्यथाकेँ दूर करबाक हेतु, आरामक हेतु समय पर उपस्थित भय पीयूष वर्षा कय सभकेँ हरित-भरित बनौने रहैत छथि। मेघ जलराशिकेँ धारण कय सभकेँ आनन्दित करैछ, नदी जलक भणडारकेँ सुरक्षित राखि जीव-जन्तुक पालन-पोषणमे सहायक होइछ, पर्वत कन्द, मूल, फल, जड़ी-बूटी आदि सामानक उपहार उपस्थित कए परोपकारिताकेँ प्रकट करैत अछि। अतएव, प्रकृतिक सभ साधनमे परोपकारक भावना सन्निहित अछि।

अवतरण-3

साहित्यकेँ समाजक दर्पण कहल गेल अछि। यर्थाथतः सामाजिक जीव मनुष्यक हृदयक घात-प्रतिघातक, आशा-आकांक्षाक जेहन मार्मिक चित्रण तत्कालीन साहित्यमे उपलब्ध होइछ; तेहन अन्यत्र नहि। कहल गेल अछि इतिहासकेँ छोड़ि सभ वस्तु फूसि रहैछ। अँगरेजीमे एकटा उक्ति अछि जकर सारांश ई अछि जे धीया-पूता जहिना आइ खेलाइत अछि तहिना मिल्टनोक समयमे खेलाइत छल। परिस्थिति परिपार्श्वक भेदें मनुष्यक व्यवहारमे अन्तर पड़ैछ; किन्तु ओकर नैसर्गिक स्वभावमे कोनो अन्तर नहि आओत।

अवतरण-4

राज जनताक थिक, जनता लेल थिक, तेँ शासन ई ध्यान रखलक जे जनताकेँ सरकारी काजक सिलसिलामे भाषाक स्तर पर कोनो असुविधा नहि होइक। इएह कारण थिक जे एक प्रदेशमे एकसँ अधिको राजभाषाक प्रावधान कयल गेलैक। फलतः, कोनो प्रदेशमे जतेक भाषाकेँ माध्यम बनाओल जाइछ सभ ओहि प्रदेशक राजभाषा कहबैछ। एकरा प्रथम, दोसर, तेसर आदि श्रेणीमे करब कोनो अर्थ नहि रखैछ। हिन्दीकेँ सम्पूर्ण राष्ट्रक हेतु राष्ट्रभाषा मानल गेलैक। जाहि प्रदेशमे मुख्यतः एक भाषा-भाषी अछि ताहिठाम तँ कोनो समस्या नहि छैक। किन्तु, बिहार सन प्रदेशमे अनेक भाषा-भाषीक बहुलता अछि तेँ राजकाज चलएबाक माध्यम भाषा लेल विवाद उठैत अछि।

अवतरण-5

हे! गेल जाड़। हाथ पयर थर-थर कँपैत रहैत छल। ओढ़ना तरसँ कोनो काज करक हेतु हाथ बाहर नहि होइत छल। साँझ-प्रात घूरक संग बैसल-बैसल ओ रातिक' पोआर तरमे नुकाय कोनहुना दिन खेपल। मोट गद्दी पर उत्तम सीरक-तुराइ ओढ़ने पड़ल-पड़ल केहन आलसी भय गेल छलहुँ। दिन उठला पर जाड़क लेल एक डूब स्नानो करब कठिन लगैत छल। तुराइ तरसँ बाहर भए अँगरखा खोलि रातिक भोजन करब दुस्साहस बुझना जाइत छल। भोरमे पढ़बाक हेतु ओछाओन छोड़ब असम्भव भय गेल छल। भरोसे नहि छल जे ई गरीबक हाथकेँ कपौनिहार, अमीरकेँ अकर्मण्य बनौनिहार, नेना-भुटकाक स्वछन्द क्रीड़ामे बाधा देनिहार जाड़ कहियो जायत।

□□□